Unit – 4

Unit - 4: खेल और बाल विकास

• खेल से आशय : अवधारणा, विशेषता, बच्चों के विकास के संदर्भ में महत्व

खेल बच्चों की स्वाभाविक क्रिया है। भिन्न - भिन्न आयु वर्ग के बच्चे विभिन्न प्रकार के खेल खेलते हैं। ये विभिन्न प्रकार के खेल बच्चों के सम्पूर्ण विकास में सहायक होते हैं। खेल से बच्चों के शारीरिक विकास, संज्ञानात्मक विकास, संवेगात्मक विकास, समाजिक विकास एवं नैतिक विकास को बढ़ावा मिलता है। पियाजे के अनुसार खेल बच्चों की मानसिक क्षमताओं के विकास में भी एक बड़ी भूमिका निभाते हैं। वाइगोत्सकी ने कहा है स्कूली स्थिति की तुलना में खेल के दौरान बच्चे की एकाग्रता, स्मृति आदि उच्चतर स्तर पर काम करती हैं। बच्चों के प्रत्येक क्षेत्र के विकास में खेल की अहम भूमिका होती है –

1) खेल कल्पनाशीलता और सृजनात्मकता को बढ़ावा देती है :– खेल में बच्चे कल्पना द्वारा अलग - अलग भूमिकाएँ निभाते हैं। ऐसा करते हुए उनकी बुद्धि व व्यवहार उसी व्यक्ति के अनुसार होता है जिनकी वह भूमिका कर रहे होते हैं। नाटक करना खेल का एक अभिन्न हिस्सा है। इस प्रकार के खेल में बालक वास्तविकता से कट और बहुत कुछ सृजनात्मक करता है। खेल - खेल में बालक कई सृजनात्मक कार्य करता है जैसे – माचिस के डिब्बों की पंक्ति द्वारा रेलगाड़ी बनाना, टूटी प्लेट से अंतरिक्ष यान इत्यादि।

2) खेल शारीरिक एवं क्रियात्मक विकास को बढ़ावा देती है :– शारीरिक और क्रियात्मक कौशलों का विकास अभ्यास करने पर निर्भर करता है।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

उदाहरण के लिए जब चार महीने के एक शिशु के आगे खिलौना रख दिया जाता है तो बच्चा अपने पीठ से पेट पर पलट कर उस तक पहुँचने का प्रयास करता है इससे उसकी माँसपेशियों का समन्वय बढ़ता है तथा शारीरिक एवं क्रियात्मक विकास को बढ़ावा मिलता है।

3. खेल भाषायी विकास में सहायक होता है :- बच्चे खेल - खेल में बोलना सीखते हैं। खेल खेलने के दौरान बच्चों का कई नए शब्दों से परिचय होता है। खेल के द्वारा उन्हे भाषा सुनने तथा बोलने का अधिकाधिक अवसर मिलते हैं जिससे वे जाने अनजाने भाषायी विकास हो जाता है। उनमे

4. खेल द्वारा बच्चे समाजिक होना सीखते है :- जब माँ शिशु को नहलाती है, कपड़े पहनाती है, सुलाती है और अन्य सभी आवश्यकताओं का ध्यान रखती है इन अंतः क्रियाओं के दौरान बालिका माँ को पहचानने लगती है यह शिशु का पहला समाजिक संबंध होता है।

5. खेल भावनात्मक विकास में सहायक होता है :- खेल क्रियाएँ बच्चों को हर्ष उल्लास, क्रोध, भय और दुख व्यक्त करने का एक अवसर प्रदान करती है। खेल में कुछ भी मनचाहा करने की छूट होती है। खेल उन भावनाओं और संवेगो को व्यक्त करने का मौका देता है अन्य स्थितिओं में अभिव्यक्त नहीं किए जा सकते है।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

• बच्चो के खेल : विविध प्रकार एवं संदर्भ

बच्चो की खेल क्रियाओं को कई प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है। कुछ वर्गीकरण खेल के स्थान के आधार पर किया जा सकता है, कुछ खेल की विषय वस्तु पर और अन्य खेल क्रियाओं पर। खेल के कुछ प्रकार निम्न हैं :-

1. मुक्त खेल तथा संरचनात्मक खेल :- इस प्रकार के खेल में खेल का मुख्य लक्ष्यों एवं उद्देश्य को ध्यान में रखकर खेल का आयोजन करता है। इसमे बच्चे मुख्य खिलाड़ी के अनुदेशों का पालन करता है। इस आधार पर खेल को मुक्त और संरचनात्मक खेलों में वर्गीकृत किया गया है। उदाहरणत: जब बालक मिट्टी के साथ किसी व्यस्क के हस्तक्षेप के बिना ही खेल रहा हो तब इसे मुक्त खेल कहते हैं दूसरी ओर आकृति की संरचना समझने के लिए जब बालक किसी व्यस्क के निर्देश का पालन करती है इसे संरचनात्मक खेल कहते हैं।

2. बाहरी तथा भीतरी खेल :- नाम से ही स्पष्ट है खुले मैदान में खेला जानेवाला खेल बाहरी खेल तथा घर में खेला जानेवाला खेल भीतरी खेल कहलाते हैं। बाहर खेले जानेवाले खेलों में क्रियाओं के अवसर मिलते हैं क्योंकि बाहर स्थान अधिक व बाधाएँ कम होती है। घर के अन्दर खेले जाने वाले खेलों में स्थान सीमित होती है और गतिविधियों की स्वतंत्रता अपेक्षाकृत कम होती है

3. व्यक्ति -गत व्यक्तिक खेल और सामुहिक खेल
जब बालक अकेले खेलता है तो व्यक्ति खेल कहलाता है और जब वह दो या दो से अधिक बच्चों के साथ खेलती है तो वह सामुहिक

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

खेल कहलाता है। समूह में खेलने के लिए आवश्यक है कि बच्चा दूसरो के दृष्टिकोण को ध्यान में रखे तथा खेल के नियमो का पालन करे। जहाँ समुह में खेलने से सामाजिक कौशल बढ़ते है वही व्यक्तिक खेल बच्चो को उन वस्तुओं से खेलने का समय देता है जो उन्हे सबसे रुचिकर लगती है।

4. ओजस्वी खेल एवं शाँत खेल :- ऐसे खेल जिसमें अधिक ऊर्जा की आवश्यकता होती है। ऐसे खेल क्रियाएँ ओजस्वी / या सक्रिय खेल कहलाती है। वे खेल जिसमें अधिक शारीरिक क्रिया की आवश्यकता नहीं होती जैसे - जमीन पर चॉक से लिखना, चित्र बनाना, मिट्टी से खेलना आदि शाँत खेल कहलाती है इसमें अधिक ऊर्जा व्यय नहीं होता है।

5. संवेदी क्रियात्मक (Sensori motor) और प्रतीकात्मक खेल :- शैशवावस्था में बच्चों का खेल है- वस्तुओं को छुना, सूँघना, चखना और परिवेश की छानबीन करना इन क्रियाओं में इंद्रियाँ संलग्न होती है और माँसपेशियों के समन्वय की आवश्यकता होती है इसलिए इन्हे संवेदी क्रियात्मक खेल कहते है। शैशवावस्था के अंत तक बच्चे नाटकीय खेल में भाग लेने लगते है बच्चे वास्तविकता से हटकर वस्तु तथा अन्य लोगों की नकल करते है। इस प्रकार खेल में वस्तुओं और अन्य लोगों को प्रतीकात्मक रूप में उपयोग करने की ज्ञानात्मक योग्यता की आवश्यकता होती है। ऐसे खेल प्रतिकात्मक खेल कहलाते है।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

• बच्चों के विविध खेल : सिखने - सिखाने के माध्यम के रूप में।

बच्चों के सीखने - सिखाने में उनके खेल का अहम भूमिका होती है।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner